Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-IX Sept. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिंदी संत साहित्य - आधुनिक युग की परिपेक्ष में

डॉ. लीला कर्वा,
लातूर.

साहित्य का संबंध समाज से होता है । समाज से रागात्मक संबंध रखकर ही साहित्य अपना कार्य करता है । साहित्य का सृजन स्वकल्याण से आगे बढ़कर बहुजन हिताय के लिए, संसार के कल्याण के लिए किया जाता है ।

भारतीय संत साहित्य में विश्वबंधुत्व **वसुधैव कुटुंब देव** की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है । मानवता के मूल्यों को बार बार प्रतिष्ठापित करनेहेतू साहित्यकारों का कार्य महत्वपूर्ण होता है ।

मध्यकालीन समाज में राजनीतिक और धार्मिक दृष्टि से अव्यवस्था, गृह कलह की स्थिती बनी हुई थी । जनता एक ओर बाहर से आये मुस्लिम आक्रमणकारियों से त्रस्त थी तो दूसरी ओर आपसी संघर्ष करनेवाले हिंदु राजाओं के अत्याचार में पिस रही थी । मुस्लिम आक्रमणकारी अपने बल और आतंक के सहारे भारतीय लोगों का धर्मान्तरण करा रहे थे। सामान्य जनता भयभित, आतंकित रहने से पूरी तरह भटक रही थी । जादू टोना, अंधविश्वास, अडम्बरता में फंसे हुए लोगों में विश्वास और मानविय मूल्यों का विकास करने का प्रयास संतों ने किया । स्वार्थी, अहंकारी, अनैतिक लोगों को प्रेम त्याग के संस्कार देने का महत्वपूर्ण कार्य संत साहित्य ने किया है ।

आधुनिक युग में भी मानव भौतिक सुख सुविधा की ओर झूक रहा है । भौतिक साधनों की चकाचौंध में वो मानवीय संवेदना भूल गया है । झटपट धनवान होने के हेतू स्वार्थी बन गया है । जिसके फलस्वरुप भ्रष्टाचार, हिंसाचार, व्यसनाधिनता जैसी अनेक समस्याएँ आज उत्पन्न हुई हैं । अनैतिकता का पग-पग पर सामना होता है । ऐसे समय संतों के बचनों द्वारा ही समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है । आज भी हमारे संतों व शाश्वत, सत्य वचन मानव को मार्गदर्शक एवम् उपयुक्त हैं ।

संत रैदास ने सम्पूर्ण समाज स्वस्थ एवम सुखी रहे, ऐसी सुंदर राष्ट्र की कल्पना अपने काव्य में की है ।

ऐसा चाहो राज में जहाँ मिले सबन्न को अन्न ।
छोट बड़ो सभी सम बसै रैदास रहै प्रसन्न ।

मेरे देश में सभी प्रसन्न रहें साथ ही स्वतंत्रतापूर्वक रहे, किसी के अधीन न हों,

पराधीनता पाप है, जानि लेहरे गीत ।
रैदास दास पराधीन को कौन करे है प्रीत । ।

जीवन में श्रम का मूल्य स्पष्ट करते हुए वो नैतिकता का पाठ पढाते हैं -

रविदास श्रम करि खाइहि, जो लों पार बसाई
नेक कमाई जड करहिं, कबहु न निहफल जाई ।

नेक कमाई हमारे जीवन में स्थिर रहती है । केवल धनवान होने में सुख नहीं. जो व्यक्ति धर्म की राह पर चलता है वो सुखी है ।

सच्चा सुख सत धरम मंहि धन संचय सुख नांहि ।
धनसंचय दु:ख की खान है, रविदास समुसि मन माही ।

धर्म का अर्थ कर्मकांड नहीं, धरम अच्छे कर्म का नाम है ।
रैदासजी यहाँ स्पष्ट करते हैं -

भगति न मुंड मुँडाए, भगति न माला दिखाई
भगति न चरण धोवाए, ऐ सब गुणी जग गाई

यही बात कबीर कहते हैं -

देव पूजि पूजि हिन्दु मुए, तुरक युए हज जाई ।
जटा बांधि बांधि योगी मुए, इनमें किन हूँन पाई ।।

लोभी और लालची लोगों को सलाह देते हैं । यह लोभ माया के फेर में आप एक बार फंस जाओगे तो फिर उसमें से बाहर निकलना मुश्किल है, इसलिए ऐसी जगह से दूर रहें ।

कबीर माया मोहिनी मोंहै जाण सुजान ।
भागा ही छुटे नहीं, भरि भरि मारै बाण ।।

अहंकार और कुसंगति के कारण हमारे जीवन में अनेक समस्याएँ आती हैं । सत्संगति द्वारा हम हमारा जीवन श्रेष्ठ बना पाते हैं । कहते हैं -

मेर निसाणी मीच की, कुसंगति ही काल ।
कबीर कहे रे प्राणियाँ, बाणी ब्रह्म संभाल ।।

कबीर कहते हैं कोई उँचे कुल में जन्म लेने से श्रेष्ठ नहीं हाता । उसके कर्म उसे श्रेष्ठ बनाते हैं -

ऊँचे कुल कया जनमियाँ, जे करनी ऊँच न होई ।
सोवन कलस सुरै भया, साधु नि हया सोई ।।

संत कविओं का मुख्य उद्देश **मानवता** को प्रतिष्ठापित करना था । इसलिए संत रैदास समाज में जातपात की विषमता समाज विकास और मानवता के लिए हानिकारक है । यह स्पष्ट करते हैं -

जात पात के फेर महि, उरझि रहर सब लोग ।
मनुष्यता को खात हुई, रविदास जात कर रोग ।।

संत कबीर भी जाति-पाति का विरोध करते हुए

जाति - पांति पूछों न कोई
हरी को भजे सो हरि का होई

या

जाति न पूछो साधू की, पूछ लिजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान ।।

कबीर जातिरहित समाज व्यवस्था की कामना रखते थे । कबीर ने समाज में फैली अनैतिकता का विरोध किया है । जुआ खेलना, चोरी करना, झूठी प्रशंसा करना, ब्याज लेना, रिश्वत लेना, परनारी गमन करना, यह सब बाते मनुष्य के लिए विनाशकारी हैं । कबीर ने प्रखर शब्दों में ऐसे लोगों का विरोध किया है ।

जुआ, चोरी, मुखबिरी ब्याज घूंस परनार ।
जो चाहे दीदार तो ऐसी वस्तु बिसार ।।
काम हरकत बल घटे, तृष्णा नाहि ठौर ।
ढ़िग है बैठ दीन के, एक चिलम भर और ।।

मानवता का मूल मंत्र है प्रेम । इसी बात को स्पष्ट करते हुए कबीर कहते हैं, इस जीवन में सबसे बड़ा मंत्र है ढ़ाई अक्षर प्रेम का । जिसने **प्रेम** को अपनाया वही सच्चा पंडित है ।

पोथी पड़ी पड़ी जग मुँहा, पंडित भया न कोय ।
ढाई अख़र प्रेम का, पढे सो पंडित होय ।

संत तुलनी ने भी इसी बात की पुष्टी की है ।

तुलसी इस संसार में दोही बचन है सार ।
सबसो मिठो बोलीबो करिबो पर उपकार ।

तुलसी कहते हैं, इस संसार में परउपकार समान कोई धर्म नहीं । **परपीड़ा** अर्थात हमारे कारण किसी को दुख होता है, तो उसके समान कोई अधर्म नहीं ।

परहित सरिस धरम नहीं भाई ।
परपीड़ा सम नही अधम भाई ।।

संत तुकाराम तो कहते हें जो दुसरों का भला करते हैं वहाँ प्रत्यक्ष परमेश्वर ही विराजमान होता है ।

जे का रंजले गांजले, त्यासी म्हणे जो आपुले
तोची साधु ओळखावा, देव तेचि जाणवावा

इस तरह संतों का साहित्य हर युग में पथदर्शक का कार्य करता है । जीवन विकास, मानव कल्याण समाज स्वास्थ्य के लिए जो शाश्वत मूल्य है, यही संत साहित्य का मर्म है । इसलिए इस साहित्य का पाठ पढना इस समाज के लिए उपयुक्त है ।

संदर्भ

- हिंदी मराठी संत साहित्य मे प्रगतशील चेतना - संपादक डॉ अंबादास देशमुख डॉ रंजीत जाधव
- समृध काव्य - संपादक डॉ संजय गडपायले